आपातकाल में सृजन फुलवारी

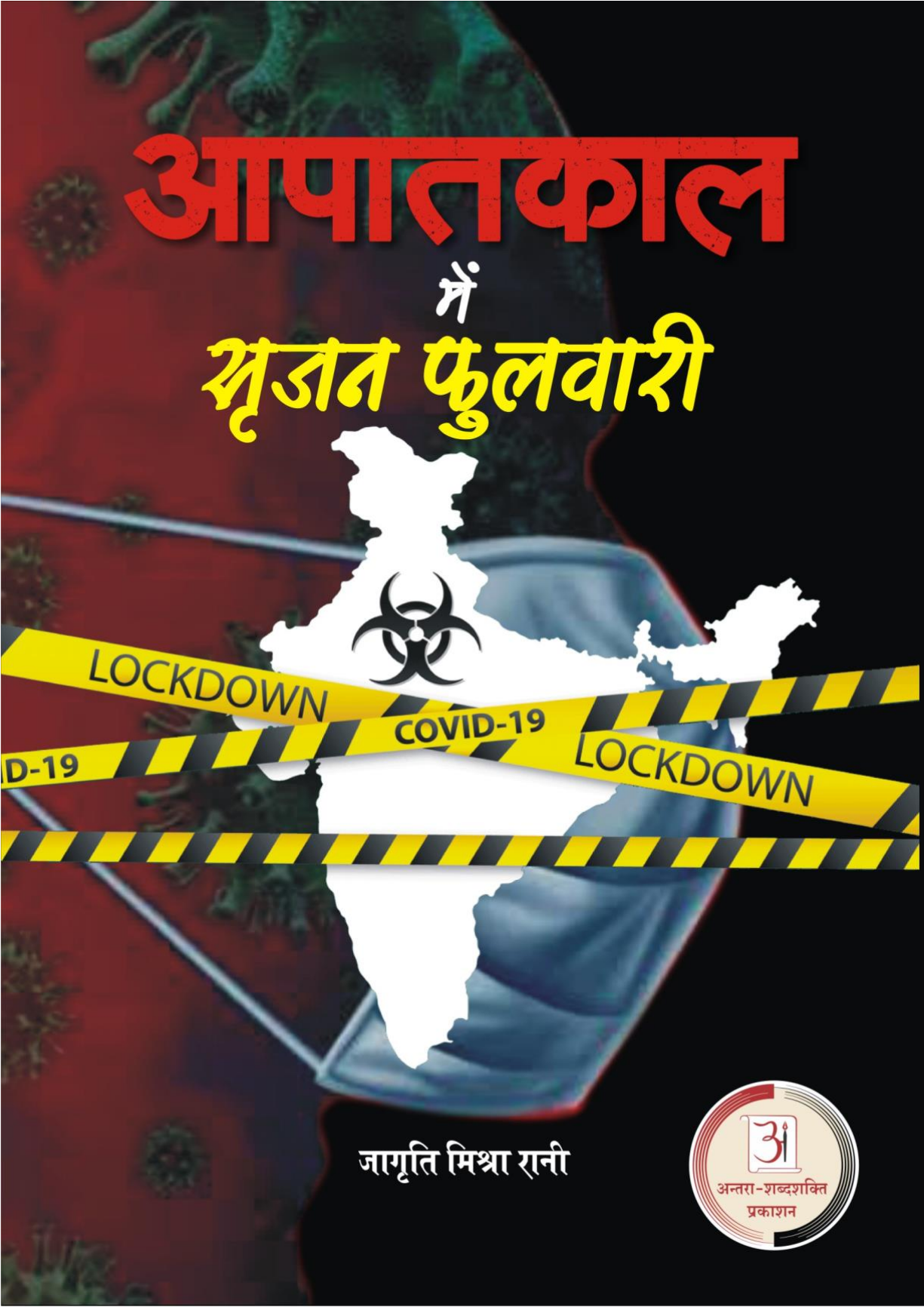

जागृति मिश्रा रानी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

जागृति मिश्रा 'रानी'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-122-0"
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, जागृति मिश्रा 'रानी'
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY JAGRITI MISHRA RANI
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन् दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	समर्पण	6
2.	बसंत	7
3.	चांदनी	8
4.	फासले	9
5.	अभी मैं मरी नहीं हूँ!	10
6.	हैलो जिंदगी!	11
7.	अनुबंध	12
8.	बहाव	13
9.	आरजू	14
10.	निरुत्तर	15
11.	पाषाण को हिलते देखा	16
12.	कितना समझ पाते हैं?	17
13.	लिखूं!	18
14.	साथ तुम्हारा	19
15.	हरजाना	20
16.	पार्टी	21

समर्पण

मुझे भरे पूरे परिवार में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, भाई बहनों में सबसे छोटी होने के कारण मां पिता जी के साथ सबकी लाडली रही, मुझसे छोटा भाई है। फिर भी जाने क्यों स्नेह मुझे अधिक मिला घर के हर सदस्य का अलग-अलग क्षेत्र में रुचि के कारण हमारा परिवार लगभग मां शारदे के उपासक हैं। पापा साहित्य के क्षेत्र में संलग्न है। तो मेरी मां को गायन में विशेष रुचि थी। सब भाई बहन भी किसी न किसी क्षेत्र मे मां शारदे के उपासक है।

शादी के बाद ससुराल में भी अनुकूल माहौल मुझे मिला, जो मेरे लिए सौभाग्य की बात है। सब कुछ अच्छा चल रहा था।

समय चक्र हंसी-खुशी खट्टी मीठी पलों के बीच बीत रहा था। लेकिन इस कोरोना काल में यह चक्र औरों के लिए जहां थम गया था । वही मेरे लिए बहुत तेज गति से चला और सभी भाई बहनों को एक माला में पिरोने वाली माँ हमें छोड़ कर चली गई। कभी वापस न आने के लिए, इस क्षति की पूर्ति कभी नहीं हो सकती, माँ शब्द ही संपूर्ण हैं उन पर अधिक कहना भी कम ही है। मेरी साहित्य साधना माँ सरस्वती और मेरी माँ को समर्पित है। अपनी माँ के लिए शब्दों की पुष्पांजलि समर्पित चंद लाइनों में है।

ममता की शीतल छांव मिले,
पीड़ा न हो वही गांव मिले,
थक जाओ गर चलते चलते,
न शूल चुभे वही ठांव मिले।

जागृति मिश्रा 'रानी'

बसंत

तुम्हें याद है हम मिले थे,
इन्हीं बसंत के मौसम की,
सुंदर रिमझिम फुहार में,
जिसने हस्ताक्षर किया था,
हमारे मिलन के पल का,
सात वचनो के साथ,
हम बंधे गए थे सात जन्मों के लिए,
मौसम धीरे-धीरे बदलने लगा,
और मौसम के साथ तुम भी,
मैं खड़ी रही अडिग वचनों से बंधी,
एक विशाल वृक्ष की तरह,
अटल मौसम की तरह,
तुम्हारे हर बदलते रंग को,
जिंदगी में शामिल करते हूए,
कभी हरियाली तो कभी,
बिना पत्तों से सुखी कभी,
बारिश के इंतजार में,
और तुमने मेरे जीवन मे पतझड़ का मौसम,
हमेशा के लिए शामिल कर दिया,
किसी और का हाथ थाम कर,
काश तुम समझते मौसम बदलते हैं,
तो अपनों की सलामती के लिए
अपनों से बिछड़ने के लिए नही,
अपनों को ठुकराने के लिए नहीं।

चादंनी

समझती थी तुम्हारे हर भाव को,
क्योंकि मैं इंसान हूँ।
लेकिन तुम कैसे समझ लेती थी?
मेरी बातों को, परेशानी को,
यहाँ तक की पीड़ा भी।
मां के डांटने पर,
जब मैं उदास हो, कोने में बैठती,
तुम आकर बैठ जाती मेरे पास
और मेरी खुशी में
चौकड़ी हिरनी क्या भरती?
जितना तुम भरती थी
माथे पर सफेद टीका, कत्थई रंग
भगवान ने तुम्हारा नामकरण करके ही भेजा था
'चांदनी'
तभी ओ तुम इस दुनिया में आई
तो मेरे मुंह से निकल पड़ा 'चांदनी' आई है
काश! तुम गाय की बेटी न होती
बहन होती तो साथ रहती हमेशा
तुम्हारी माँ को बेच दिया गया
साथ में तुम्हें भी जाना था
मजबूर थे हम दोनों
तुम्हें जाते देख मेरी आंखों से आंसू झर रहे थे
मेरीआंखों को देख तुम्हारे आंखों से आंसू बह रहे थे
तुम मुझसे दूर चली गई हमेशा के लिए
'मेरी चांदनी' हमेशा याद आती हो तुम!

फासले

न हमने बेवफाई की,
ना तुम बेवफा हो
फिर दरमियां क्यों फासले रह गए!
सी लिया जो लबों को हमने,
तुमसे भी कुछ कहा न गया,
कुछ तुम कहोगे
कुछ हम सुनेंगे
शिकवे शिकायतें दूर करेंगे,
सब पल इसी आस में निकलते गए,
लम्हे धीरे-धीरे रेत से फिसलते गए,
सफर आधा कट चुका
आस और विश्वास में,
आओगे तुम लौट के इंतजार में,
फासले मिटेंगे कि बढ़ेंगे पता नहीं,
ताउम्र रहेंगे पता ही नहीं,
जब कोई खता ही नहीं,
बस एक यही सवाल उठता है,
तन्हाइयों में,
न तुम बेवफा
न हम बेवफा
फिर दरमियां क्यों ये फासले हैं?
बस
सिमटती गई खुद में,
उतनी ही टूटती गई।
रह रह के हर वक्त टीस,
उठती ही गई,..!

अभी मैं मरी नहीं हूँ!

अरे! गुल्ली डंडा, क्रिकेट,
सब लड़कों के खेल हैं,
खेलने दे ना भाई को,
घर के काम में हाथ बटाना सीख,..
यही तेरे काम आएगा,
इस तरह की रोक टोक का,
सिलसिला चलता रहा,
जब तक ब्याही ना गई,..
आस बंधी थी ससुराल को लेकर,
कम से कम यहाँ की रानी रहूंगी।
यह भ्रम भी जल्दी टूट गया,
बस बंदिशें उलाहनों में बदल गई,..
बढ़ती उम्र के साथ,
मैं हस्तांतरित होने लगी,
पिता के हाथों से पति के हाथ,
पति के हाथों से बेटे के हाथ में,..
तीनों के ही हाथों में दब के रही,
दिल की ख्वाहिशें और अरमान,
कोई फर्क न था
फर्क था तो बस रोकने टोकने के लहजे का,...
कभी आदेश,
कभी घर के मान सम्मान का हवाला देते हुए,
तो कभी उम्र की याद दिलाते हुए,
शायद जिंदा मैं कभी थी ही नहीं,...
लेकिन हाँ! कुदरत की बनाई सांसे,
अभी तक चल रही है, जो सबको नजर आ रही है,
इसीलिए मैं जिंदा हूँ,...!
"अभी मैं मरी नहीं हूँ"

हेलो जिंदगी!

कुछ खट्टी सी
कुछ मीठी सी है,
हेलो जिंदगी! बुरा मत मानना,
थोड़ी तीखी भी है।
जैसी भी है, मिली तो मुफ्त में,
जैसे यह आकाश,
धरती और पानी,
तुझे पाने के लिए
कुछ हमने दिया ही नहीं।
शायद
इसीलिए कदर कभी की ही नहीं,
अब देख तू पास है
तो तुझमें कमियां ही नजर आती है
अपनी छोड़ औरों की जिंदगी ही सुहाती है।
कोई सेलिब्रिटी है
कोई खिलाड़ी है,
फिर मैंने तेरी कौन सी बात बिगाड़ी है।
बस शिकवे-शिकायत ही
करते हैं तुझसे।
तू जिस रूप मेंमुझे मिली है
वैसे कितनों में खिली है।
नादान हम जो समझते नहीं,
दुख, दर्द में हमें आंक रही है,
तू जौहरी है, हीरे को तराश रही है,..!

अनुबंध

कहाँ हो?
आज मुझे मिली क्यों नहीं,
रोज, किसी वक्त मुझसे मिल लिया करो,
मेरी बातें सुन लिया करो।
जो मैं किसी से नहीं कह सकती,
वह तुमसे ही तो कहती हूँ,
कही नहीं सीख सकती,
वह तुमसे ही तो सिखती हूँ।
सच में तुम मेरी प्रिय सखी हो,
मेरी तन्हाई तुम मेरी प्रिय सखी हो।
हर बात तुमसे कहती हूँ,
सृजन करना भी सीखती हूँ।
तुम्हारे साथ दुखी होती हूँ,
तो तुम्हारे साथ में खड़ी हूँ,
गर साथ तुम्हारे मैं रोई, तो साथ तुम्हारे हँसी हूँ।
लोग तुम्हें खामख्वाह बदनाम करते हैं,
तुम्हारी बदौलत ही दुनिया में नाम करते हैं,
सुकून मुझे मिला नहीं, इमारतों की महफिल में,
हर वक्त की भीड़-भाड़ में, जश्न के धूम-धाम में,
मेरी तन्हाई चलो हम अनुबंध करते हैं,
रोज आपस में ज्यादा से ज्यादा मिलने की कोशिश चंद करते हैं।
तुम्हारे साथ समय बिताना मुझे बहुत प्यारा लगता है,
मेरी सखी तन्हाई, इस जीवन में मुझे तुम सच में बहुत रास आई।

बहाव

मैं नारी हूँ,
मर्यादा से बंधी हूँ ,
मैं चाहूं भी तो बहाव में बह नहीं रह सकती।
बेझिझक मुस्कुरा नही सकती।
हर वक्त एहसास रहता है,
मैं माँ हूँ, बहन हूँ, बेटी हूँ,
घर की थामे डोर हूँ,
कभी मजबूत कभी कमजोर हूँ।
इजाजत नहीं मुझे कहने की,
हिदायत मिलती है चुप रहने की।
घर का सम्मान मुझसे है,
मुस्कुराकर घर के बाहर निकल नहीं सकती,
मेरा भी दिल करता है,
बेखौफ सड़कों पर चलूं।
पर नहीं कर सकती,
नारी हूँ तो बह नहीं सकती,
अगर बहती हूं तो केवल स्नेहधारा में,
खुद के लिए नहीं,
मेरी ख्वाहिशों की धारा थम सी गई है,
मर्यादा में बंधकर जम सी गई है।

आरजू

सब मेरे खिलाफ हो गए थे,
जब मैंने दृढ़ता से,
अपना फैसला सुना दिया,
मेरे जीवन में
कोई साथी बन कर आया
तो तुम्हारे अलावा कोई और नहीं हो सकता,
माँ, दी, भैया सबने,
अपने दिल के गुबार निकाले,
खड़ी थी मैं किसी अपराधी की तरह,
एक अजीब कशमकश थी,
मुझे दोनों अजीज थे,
तुम भी और मेरा परिवार भी,
मेरे लिए आसान नहीं था फैसला करना,
पर मैंने किया
और चल पड़ी तुम्हारे साथ,
इस उम्मीद के साथ,
मैंने सब कुछ छोड़ दिया,
उस दुनिया को जो मेरे लिए जन्नत से कम न थी,
मैं नहीं मांगती कोई वचन,
नहीं मांगती कोई कसम,
बस मेरी एक ही आरजू है इस सफर में,
थामे रहना हाथ मेरा, ताउम्र।
मेरी ये आरजू,
पूरी करोगे न?

निरुत्तर

तू करवा चौथ रहना,
पति की उम्र बढ़ेगी।
छठ का उपवास
करने से पुत्र की उम्र बढ़ेगी
बहुला चौथ करना
भाई को की उम्र बढ़ेगी
खूब दुआ मिलेगी इनकी!
उपवास रहने की आदत
इसीलिए अभी से डालनी होगी
सावन के उपवास से शुरु करो
यहीं से शुरुआत होती है
गृहस्थ जीवन के आशीर्वाद की
माँ!
मेरे लिए कौन उपवास रहेगा
मां-बेटी एक-दूजे को निहार रही थी
बेटी जो प्रश्न मां से कर रही थी
इसका उत्तर मां के पास था या नहीं?
माँ है तो कैसे कहती,..
निरुत्तर रही
तू तो बद्दुआ में भी सलामत रह सकती है
मारने की कोशिश में भी बच सकती है
उपवास कोई नहीं करेगा।

पाषाण को हिलते देखा

मेरे कई बार कहने पर भी
कि मैम, मेरी आंखें ऐसी ही है, काजल नही लगाया,
नई मैम ने नहीं माना और यह कहकर,
कि स्कूल में काजल लगाना अलाउ नहीं,
आंखों को रगड़ रगड़ कर पोछ दिया,..!
सूजी आंखें लेकर घर गई,
पापा के अलावा किसी ने गौर नहीं किया,
पूरी बात जान कर भी,
उस वक्त पापा खामोश मुझे देखते रहे,
मैं पता नहीं क्या ढूंढ रही थी उनकी आंखों में,...!
रोज सहेलियों के साथ जाना होता था,
दूसरे दिन पापा मुझे साथ लेकर गए स्कूल,
प्रिंसिपल रूम में जो हुआ
मेरे पैरों के नीचे की जमीन लगा जैसी हिल रही हो,
पापा का यह रूप मैंने पहली देखा,..!
उनकी आवाज तेज थी, आँखों में जैसे खून उतर आया,
सारा स्टाफ सिर झुकाये खडा था,
उनके आखिरी शब्द,
आज के बाद मेरी बेटी को इस तरह से हाथ लगाया तो,...
आगे बोलने की जरूरत नही थी,
आगे ऐसा नहीं होगा सबने एक साथ कहा,
मैं देख रही थी पापा को,
आज मेरे लिए सब कुछ नया था
पापा का स्कूल छोड़ना,
मेरी सुरक्षा को लेकर इतना क्रोधित होना,..!
उनको शांत रूप जो किसी शिला के समान था,
समय कैसा भी हो शांत रहने वाले पापा को,
आज इस रूप में देखा,
पहली बार जाना पाषाण हिलता भी है,
हाँ! आज पहली बार पाषाण को हिलते देखा।

कितना समझ पाते हैं?

कितना समझ पाते हैं?
दर्द औरों का हम,
आकाश में उड़ते,
पंछी को देख सोच लेते हैं,
कितना खुश है,
और मन में पाल लेते हैं एक भ्रम;
कितने स्वतंत्र हैं?
पंछी उडते आकाश में!
कि उड़ सके 'उन्मुक्त गगन में',
उड़ते तो हैं पर स्वतंत्र कहां?
निर्भीकता कहां?
हर वक्त डर है सैयाद का,
आकाश में उड़ते।
उनसे भी अधिक शक्तिशाली परवाज का।
पंछी उड़ना तो चाहता है
ऊंची उड़ान! सुकून से,
पर कैसे?
क्या वह उड़ पाता है?
अपने मन की हर मुराद पूरी कर पाता है?
जब पंछी भी स्वतंत्र नहीं
आकाश में उड़ते हुए भी,
तो मैं कैसे कह दूं?
"मन मेरे पंछी बन उड़ जाऊं मै"

लिखूं!

बहुत सोचा
क्या लिखूं?
लगा क्यों न खुद पर
गजल लिखूं?
बिखरे गेसू की
घटाएं लिखूं?
मरमरी से बदन को झील का
कमल लिखूं?
नयन को
झील लिखूं?
होठों की मधुर
मुस्कान लिखूं?
प्रकृति ही समाहित है
सौंदर्य में मेरे।
रूप माधुर्य संग है
हृदय के कोमल
भावों से सुसज्जित
खुदा की अनमोल फुर्सत के पल में
गढ़ी कृति
ग़ज़ल ही क्यों?
सोचती हूँ
क्यों ना खुद पर एक किताब लिखूं,..!

साथ तुम्हारा

सूरज कल भी निकला था
आज भी निकला है
ये सुहानी शाम
झील का किनारा
झील में खिलता कंवल का समूह
शीतल पवन की
पुरवाई कल भी चलती थी
आज भी चलती है पर.....
पंछियों की कलरव
कोयल की कूक
बढ़ा देती है सौंदर्य
प्रकृति सिंगार कल भी करती थी
आज भी करती है पर....
इन खूबसूरत वादियों में
हर शाम इसी बैंच में
घंटों साथ बिताया करते थे
दिल के जज्बात बताया करते
लगता था जैसे मुट्ठी में आसमान हो
ये वादियां ये नजारे कल भी थे
आज भी है पर.....
सब बदल गया है
ये सब हसीन थे
जब साथ तुम थे
हर दिन नया था
जब तुम साथ थे
आज कुछ भी हसीन नहीं है,
जो साथ तुम्हारा नहीं है,..!

हरजाना

ये रोज का नियम था,
हवा भरी हुई साइकिल में,
हवा भरवाने के लिए,
चाचा की दुकान जाना,
साइकिल में हवा डालना तो बहाना था।
समोसा लेना था।
एक मुस्कुराहट के साथ,
पंप लेकर हवा भरने का नाटक करते,
हुए चाचा का कहना,
रानी बिटिया, समोसा ले लो,
रानी की इमानदारी भी तो देखो
समोसे के इतने बड़े ढेर से,
बस एक ही निकालना,..!
एक समोसे में ही हक समझते थे।
अचानक यह एक दिन बदला,
और जाओ, समोसा ले लो,
कहने वाले चाचा, पुड़िया बांधकर देने लगे,..!
धक्का लगा जब उन्होंने,
पहली बार ऐसा किया,
फिर धीरे-धीरे आदत बनी,
कुछ वक्त बाद यह भी बदला,
अब चाचा समोसे के पैसे लेने लगे,..!
और हम रानी बिटिया से तुम,
तुमसे फिर आप में बदलने लगे।
अब समोसे में वह स्वाद न था
जो पहले थी, वो मिठास नहीं थी,..!
यह शायद बचपना खोने,
और बड़े होने का हर्जाना था,
जो भुगतना पड़ा,
आगे ना जाने और किस किस रूप में भरना पड़ेगा,..।

पार्टी

चल रही थी खूब,
अमीर और दिलदार लोगों की पार्टी,
जहाँ शामिल होने के लिए,
किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं,
और न ही आवश्यकता है निश्चित राशि की,
बस एक मुस्कान के साथ कह दो,
मुझे भी शामिल करोगे यार,
माँ ने बस दस रुपए दिए हैं,
एक साथ आवाज आई,
आ जाओ!
पैसे की भी जरूरत नहीं, पूरी तैयारी है,
देखो कुरकुरे, चिप्स, बिस्किट,
पानी के छोटे-छोटे पाउच,
जरूरत के सारे सामान जो,
किसी शानदार पार्टी में रहते हैं।
उससे भी कहीं अधिक,
यहाँ था प्यार,
जहाँ कोई ऊंच-नीच, न भेदभाव,
उनकी पार्टी देख
मेरा दिल गदगद हो उठा,
तैर गई होठों पर एक मुस्कुराहट,
शामिल होने की इच्छा भी थी, शानदार पार्टी में,
पर हिम्मत नही हुई,
वो भोलापन, वो मासूमियत मुझ में नहीं है
बच्चों सी अमीर नहीं,
मैं उसमे शामिल होने के योग्य न थी।
बस देखती रही मंद मुस्कान लिये हुये।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

जागृति मिश्रा रानी

Mobile- 9009330298

आज सारा विश्व कोरोनावायरस के दंश को झेल रहा है। जिससे मुक्त होने का एक ही उपाय है। अपने घरों में रहकर एक-दूसरे से दूरी बनाकर स्वच्छता के साथ रहते हुए संक्रमण से बचाव, क्योंकि अभी तक इसका कोई इलाज कोई वैक्सीन तैयार नहीं हो पाया है।

लेकिन कहते हैं। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। उसी प्रकार करोना रूपी सिक्के के भी दो पहलू हैं। एक तरफ जहां घर में बंधन है। जो बहुत मुश्किल है। किंतु दूसरी तरफ घर परिवार के साथ रहने का अवससर भी है।

घर के सदस्यों को करीब लाने का कार्य कर रही है। वही समय का उपयोग करना भी सिखा सिखाती है। संरचनात्मक सृजन जैसे पुरानी चीजों का संग्रहण, सिलाई कढ़ाई, घर की साज-सज्जा या साहित्य सेवा प्रमुख है। जो आपातकाल में सब को प्रेरित कर रहा है और सब खुशी से इस कार्य मे संलग्न है। अंतरा शब्दशक्ति आयोजको का बहुत आभार जो इस विकट परिस्थिति मे सबके कलम को निखारने का काम कर रही है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-122-0"

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/